नईदुनिया

संपादकीय

कट कॉपी पेस्ट का सरकारी मॉडल, रिपोर्ट बदलो, साइट नहीं, नौकरी चाहिए, पर काम नहीं

यह मध्यप्रदेश के सरकारी दफ्तरों का नया चलन है। काम मत करो, कॉपी करो और पेस्ट कर दो। भोपाल के पश्चिमी बायपास से लेकर सागर रोड तक यही खेल चल रहा है। एक ही रिपोर्ट को उठाकर हर जगह लगा दिया जाता है। अधिकारी शायद यह मानकर चलते हैं कि जनता रिपोर्ट पढ़ती नहीं है और पढ़ भी ले तो समझती नहीं है, लेकिन इस बार मामला कुछ अलग है। लोग रिपोर्ट पढ़ भी रहे हैं और उसमें हुई गड़बड़ी पकड़ भी रहे हैं। भोपाल के पश्चिमी बायपास की पर्यावरण मंजूरी से जुड़ी रिपोर्ट इसका ताजा उदाहरण है। ग्राम आमला में हुई जनसुनवाई में लोगों ने सीधा सवाल किया कि जब 6463 पेड़ कटेंगे तो पर्यावरण पर इसका क्या असर होगा। अधिकारियों ने जवाब दिया कि ईआईए रिपोर्ट तैयार की गई है, लेकिन जब रिपोर्ट सामने आई तो सवाल और गंभीर हो गए। रिपोर्ट में सागर में बनी सड़क की जानकारी थी, रातापानी टाइगर रिजर्व का जिक्र था, तालाब के कैचमेंट की बातें थीं, जबकि पश्चिमी बायपास का रातापानी से कोई लेना-देना ही नहीं है। यानी एक सड़क की रिपोर्ट उठाई गई और दूसरी सड़क पर चिपका दी गई। सवाल यह है कि आखिर ऐसा क्यों होता है?

दरअसल, ईआईए रिपोर्ट बनाना आसान काम नहीं है। इसके लिए जमीन पर जाना पड़ता है, पेड़ गिनने पड़ते हैं, पानी और हवा की जांच करनी पड़ती है, जानवरों की स्थिति देखनी पड़ती है और महीनों का अध्ययन करना पड़ता है। लेकिन जब काम जल्दी निपटाने की मानसिकता हावी हो जाए तो पुरानी रिपोर्ट में नाम और स्थान बदलकर नई रिपोर्ट तैयार करना सबसे आसान रास्ता बन जाता है। बड़ी-बड़ी कंपनियों को करोड़ों रुपये की लागत से रिपोर्ट तैयार करने का काम दिया जाता है, लेकिन अगर वे भी इंटरनेट से आंकड़े उठाकर रिपोर्ट में पेस्ट कर दें तो फिर सवाल केवल लापरवाही का नहीं, जवाबदेही का भी है।

यह पहला मामला भी नहीं है। रातापानी के ईको सेंसिटिव जोन को लेकर भी सवाल उठ चुके हैं। पर्यावरण संवेदनशील क्षेत्र तय करने की बात कही गई थी, लेकिन अधिसूचना आज तक जारी नहीं हुई। इससे यह सवाल उठता है कि कहीं पूरी प्रक्रिया केवल फॉर्मेलिटी और खानापूर्ति बनकर तो नहीं रह गई है। इसका सीधा नुकसान पर्यावरण को होता है, क्योंकि गलत रिपोर्ट के आधार पर बनी योजना पर्यावरण की सही सुरक्षा कैसे कर सकती है।

पश्चिमी बायपास को लेकर लोगों की चिंता भी इसी वजह से गंभीर है। बड़े तालाब के कैचमेंट से सड़क निकलने पर तालाब को नुकसान होने की आशंका जताई गई है। बायपास बनने के बाद पप्पू और बोरियां का पानी कहां जाएगा, इसका जवाब रिपोर्ट में नहीं है। रिपोर्ट में सागर की सड़क का विवरण हो और भोपाल की सड़क का जवाब न हो तो सवाल उठना स्वाभाविक है। पश्चिमी बायपास की लागत और रिपोर्ट में दिए गए आंकड़ों को लेकर भी सवाल सामने आए हैं। ऐसे में अगले 10 से 15 वर्षों में पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का सही आकलन कैसे होगा, यह समझना मुश्किल है।

समाधान भी बहुत कठिन नहीं है। जिस एजेंसी ने गलत रिपोर्ट तैयार की है, उसकी जिम्मेदारी तय हो, भुगतान रोका जाए और जरूरत पड़े तो उसे ब्लैक लिस्ट किया जाए। रिपोर्ट सार्वजनिक की जाए, ताकि जनता उसे पढ़ सके। जनसुनवाई को केवल वीडियो बनाने और औपचारिकता पूरी करने तक सीमित न रखा जाए। लोगों की आपत्तियों को रिपोर्ट में शामिल किया जाए और उन पर हुई कार्रवाई की जानकारी भी दी जाए। सरकार विकास करे, सड़कें बनाए, फ्लाईओवर बनाए, इसमें किसी को आपत्ति नहीं हो सकती, लेकिन विकास की नींव अगर गलत रिपोर्ट पर रखी जाएगी तो वही विकास आगे चलकर विनाश का कारण बन सकता है। अधिकारियों को समझना होगा कि अब जनता जागरूक है। वह रिपोर्ट पढ़ती है और पेस्ट किया हुआ पैराग्राफ पकड़ भी लेती है। इसलिए बेहतर है कि काम किया जाए, क्योंकि कट कॉपी पेस्ट का यह सरकारी मॉडल अब ज्यादा दिन चलने वाला नहीं है।

आजकल

जनता को राहत, कर्मचारी को टेंशन, कब टूटेगी बैंक में बातचीत की दीवार, ग्राहक खुश, बैंककर्मी नाराज

सरकारी बैंकों ने पिछले कुछ महीनों में ग्राहकों को कई राहतें दी हैं। डिजिटल सर्विस तेज हुई है और लोन प्रोसेस आसान हुआ है। लेकिन बैंक कर्मचारी आज भी अपने पुराने मुद्दों को लेकर आंदोलन की राह पर हैं। बैंक कर्मचारियों की मांग कोई नई नहीं है। पांच दिन का कार्य सप्ताह सबसे बड़ी मांग है। हर शनिवार को अवकाश की मांग लंबे समय से चल रही है। बीमा और अन्य केंद्रीय कर्मचारियों को यह सुविधा मिल चुकी है, लेकिन बैंक कर्मचारियों को अभी तक नहीं मिली।

दूसरी मांग पर्याप्त भर्ती की है। बैंकों में काम बढ़ रहा है, लेकिन स्टाफ नहीं बढ़ रहा। एक कर्मचारी पर दो कर्मचारियों का बोझ है। यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक यूनियंस लगातार इन मुद्दों को उठा रहा है। केंद्र सरकार का तर्क है कि बैंक वित्तीय समावेशन का बड़ा माध्यम बन गए हैं। अगर हर शनिवार छुट्टी होगी तो ग्रामीण इलाकों में ग्राहकों को परेशानी होगी। सरकार चाहती है कि डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा मिले। तब जाकर पांच दिन के कार्य सप्ताह पर विचार हो सकता है। वित्त मंत्रालय और आईबीए के बीच कई दौर की बातचीत हुई है, लेकिन कोई ठोस नतीजा नहीं निकला। इस असमंजस का असर ग्राहक पर पड़ रहा है। जब कर्मचारी हड़ताल पर जाते हैं तो करोड़ों का लेनदेन रुक जाता है। पांच दिन के कार्य सप्ताह को चरणबद्ध तरीके से लागू करे। बैंकों में खाली पदों को तुरंत भरा जाए, ताकि कर्मचारियों पर काम का दबाव कम हो। बैंकिंग सेक्टर देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। जनता को राहत देना अच्छी बात है, लेकिन जो राहत दे रहे हैं, उनके मुद्दों पर भी ध्यान देना जरूरी है। केंद्र सरकार और बैंक संगठनों को एक टेबल पर आकर अंतिम फैसला करना होगा।

युगपुरुष श्रद्धेय अशोक सिंहल का जन्मशताब्दी वर्ष

नरेंद्र मोदी

एक बहुत सुंदर सुभाषित है, 'वृक्ष कबहुँ नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर। परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर।' इसका मतलब है कि पेड़ कभी अपने फल स्वयं नहीं खाता, नदी अपना जल अपने पास नहीं रखती। इसी तरह, संत स्वभाव के लोग भी स्वयं को प्राथमिकता ना देते हुए, सदैव दूसरों की सेवा के लिए तत्पर रहते हैं, अपना जीवन लोक कल्याण के लिए समर्पित कर देते हैं। सदियों से हमारे ऋषियों ने हमें यही सिखाया है कि मानवता के कल्याण के लिए समर्पित जीवन का महत्व व्यक्तिगत उपलब्धियों से कहीं अधिक होता है। श्रद्धेय अशोक सिंघल जी का जीवन इस भावना का पुण्य उदाहरण है।

27 सितंबर से हम स्वर्गीय अशोक सिंघल जी का जन्म-शताब्दी वर्ष मनाने जा रहे हैं। यह एक महान विभूति के सम्मान का सुअवसर है। उन्होंने आध्यात्मिक साधना, सांस्कृतिक जागरण और दशकों तक समर्पित भाव से समाज एवं संगठन के कार्यों को आगे बढ़ाया।

यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मुझे स्वर्गीय अशोक जी के साथ लंबे समय तक कार्य करने, उनसे सीखने, उनसे संवाद करने और उनका स्नेह प्राप्त करने का अवसर मिला। मुझे 1981 का एक प्रसंग याद आता है। उस समय मैं एक युवा कार्यकर्ता के तौर पर संगठन की ओर से मिली जिम्मेदारियां निभा रहा था। तब मुझे अशोक जी का हाथ से लिखा एक पत्र मिला। उन्होंने पत्र में आने वाले एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी थी और मुझे कुछ जिम्मेदारियां सौंपी थीं। उस समय अशोक सिंघल जी से पत्र पाना, मेरे लिए बहुत विशेष और यादगार क्षण बन गया था।

मैंने उन्हें कई दशकों तक दिन-रात काम करते देखा। वे देश के दूर-दराज के क्षेत्रों की लंबी और कई बार कठिन यात्राएं किया करते थे। गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों में जाना उन्हें विशेष रूप से प्रिय था। वे लगातार इस पर चिंतन करते थे कि समाज के वंचित और अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों के लिए और क्या किया जा सकता है। जब भी देश में कहीं प्राकृतिक आपदा आती, तो अशोक सिंघल जी सबसे पहले वहां पहुंचने वालों में होते या फिर प्रभावित लोगों की सहायता के लिए कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन देते। वर्ष 2001 में कच्छ में आए भूकंप के बाद उनके साथ का मेरा अनुभव अविस्मरणीय बन गया।

आदरणीय अशोक जी अत्यंत प्रतिष्ठित और

संपन्न परिवार से थे। उनके पिता श्री महावीर जी की एक प्रशासक के रूप में पहचान थी। उनके एक भाई श्री बी.पी. सिंघल जी पुलिस अधिकारी बने और बाद में संसद सदस्य भी रहे। दूसरे भाई श्री वी.पी. सिंघल जी त्रिपुरा के तब मुख्य सचिव बने, जब यह नया राज्य बना था। परिवार के अन्य सदस्यों ने भी कॉमर्स और कृषि के क्षेत्र में सफलता हासिल की। लेकिन शुरू से ही अशोक जी का झुकाव बिल्कुल अलग दिशा में था। बहुत कम उम्र में ही उनके व्यवहार में दूसरों के प्रति करुणा और सेवा की अद्भुत भावना दिखने लगी थी। वे चाहते थे कि भारत का पुनरुत्थान हो और मां भारती की संतान गौरवशाली उपलब्धियां हासिल करें। प्रयागराज में पले-बढ़े अशोक जी कई घंटे संगम के तट पर बैठा करते थे। नदी के प्रति उनका स्वाभाविक आकर्षण था। वहां आने वाले साधु-संत और श्रद्धालुओं से भी उनकी बहुत आत्मीयता थी। इससे भारत के सांस्कृतिक लोकाचार की उनकी समझ और समृद्ध हुई। समाज के लिए कुछ करने का उनका संकल्प भी और दृढ़ हुआ। दूसरों के लिए जीने की यही ललक उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में ले आई। उनको जो भी जिम्मेदारी मिली, उसे उन्होंने पूरे उत्साह, अनुशासन और कर्तव्यभाव से निभाया।

अशोक सिंघल ने अपने निरंतर प्रयास और अथक परिश्रम से अनेक संस्थाओं और आंदोलनों को मजबूत किया। अपनी ओजस्वी वाणी और अभिव्यक्ति की अद्भुत शैली से वे पूरी सभा को मंत्रमुग्ध कर देते थे। अपने साथी कार्यकर्ताओं के प्रति वे अत्यधिक स्नेह रखते थे। जो भी उनके संपर्क में आता, वह उनकी सादगी से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। संत समाज के साथ उनके संबंध बहुत प्रगाढ़ थे। देशभर के साधु-संतों के बीच भी उनका काफी सम्मान था। संतगण उनके परामर्श को महत्व देते थे और उनकी बातों को पूरे आदरभाव से सुनते थे।

मेरी स्मृति में ऐसी दो घटनाएं उभर रही हैं, जिनसे श्री अशोक सिंघल जी के विराट व्यक्तित्व को समझा जा सकता है। पहली घटना 1993 की है। विश्व हिंदू परिषद ने स्वामी विवेकानंद जी के शिकागो संबोधन के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में अमेरिका में एक सम्मेलन आयोजित किया था। विदेश में ऐसे भव्य सम्मेलन का विजन, उसकी प्लानिंग और विभिन्न समूहों को एक मंच पर लाने का भगीरथ प्रयास श्री अशोक जी के अद्वितीय संगठनात्मक कौशल का परिचायक था।

दूसरी घटना वर्ष 2000 की है, जब त्रिनिदाद और टोबैगो के पोर्ट ऑफ स्पेन में विश्व हिंदू सम्मेलन का आयोजन हुआ था। उस समय मैं भी वहीं था। मैंने प्रत्यक्ष देखा कि अशोक सिंघल जी की उपस्थिति ने अन्य प्रतिनिधियों में कितना उत्साह भर दिया था। मेरे संबोधन के बाद उन्होंने जिस तरह मेरी सराहना की, वो मेरे लिए बहुत भावुक कर देने वाला अनुभव था। मैंने एक बार फिर अनुभव किया कि उनका प्रोत्साहन किस तरह हर कार्यकर्ता को नई ऊर्जा से भर देता था।

राम जन्मभूमि आंदोलन में श्री अशोक सिंघल जी की ऐतिहासिक भूमिका का स्मरण किए बिना उनका कोई भी उल्लेख अधूरा है। वर्ष 1991 की बोट क्लब रैली में दिए गए उनके ओजस्वी संबोधन को कौन भूल सकता है? या आंदोलन के चरम पर लहूलुहान और घायल अवस्था में अशोक जी की वह ऐतिहासिक तस्वीर भला किसकी स्मृति से मिट सकती है? आज अयोध्या में भव्य राम मंदिर है, तो इसके पीछे अशोक जी जैसी विभूतियों का निस्वार्थ समर्पण है, जिन्होंने इसे संभव बनाने के प्रयास में स्वयं को पूरी तरह खपा दिया। आज यदि अशोक जी हमारे बीच होते तो अयोध्या में राम मंदिर को देखकर वो सबसे अधिक भावुक एवं प्रसन्न होते।

स्वर्गीय अशोक सिंघल जी के विचार बहुत सुलझे हुए थे। वे स्पष्ट रूप से मानते थे कि समाज में समरसता के साथ ही भाईचारे का संदेश मजबूत होना चाहिए। उन्होंने सामाजिक एकता और समानता के लिए निरंतर कार्य किया। उनका साफ मत था कि समाज में किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति समान गरिमा व सम्मान का अधिकारी है। यही वजह थी कि उन्होंने अयोध्या में राम मंदिर की पहली ईंट रखने को लेकर अपने विचार को स्पष्ट रूप से रखा। उन्होंने ही कहा था कि यह पुनीत कार्य बिहार के वीएचपी कार्यकर्ता और वंचित वर्ग से आने वाले श्री कामेश्वर चौपाल जी के हाथों से हो। काशी में एक धर्म संसद के दौरान उन्होंने डोम राजा को सम्मानित करने का फैसला किया और कई सामुदायिक अभियानों में उनके साथ मिलकर काम किया।

राष्ट्र-निर्माण के साथ ही श्री अशोक सिंघल जी के दो ऐसे प्रिय क्षेत्र थे, जो उनके हृदय के अत्यंत निकट थे। शिक्षा (विशेषकर वैदिक शिक्षा) और संगीत, इन दोनों से उनका गहरा लगाव था। वाराणसी के सांसद के रूप में मुझे इस बात पर अत्यंत गर्व की अनुभूति होती है कि जहां का मैं प्रतिनिधित्व करता हूं, उस शाश्वत काशी ने श्री अशोक सिंघल जी के जीवन में एक अहम भूमिका निभाई। उन्होंने बीएचयू से शिक्षा प्राप्त की थी और वे एक मेधावी छात्र के रूप में जाने जाते थे। वे एकल विद्यालय की पहल से भी गहराई से जुड़े थे, जिसने दूर-दराज के गांवों, खासकर जनजातीय समुदायों तक बुनियादी शिक्षा पहुंचाने का कार्य किया। वे जितने गहरे अध्येता और उत्साही पाठक थे, उतने ही अच्छे श्रोता भी थे। वे युवा कार्यकर्ताओं को सदैव पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करते रहते थे।

आदरणीय अशोक जी को निकट से जानने वालों को पता है कि वे कितना सुंदर गाते थे। मुझे नागपुर की उन बैठकों की याद आती है, जिसमें वे 'एकल गीत' गाया करते थे। उनका गायन सभी को मंत्रमुग्ध कर देता था और पूरी बैठक में नई ऊर्जा भर जाती थी। वर्ष 2015 में उनके 90वें जन्मदिवस समारोह का एक वीडियो खूब वायरल हुआ था, जिसमें उन्होंने 'हे मातृभूमि मेरी, हे पितृभूमि मेरी' गाकर सभी को चौंका दिया था।

स्वर्गीय अशोक सिंघल जी ने अपने जीवन में हर क्षण इस महान राष्ट्र के उत्कर्ष का ही स्वप्न देखा था। उनके आदर्शों से आज भी हमें ये प्रेरणा मिलती है। उनकी जन्मशती के इस पावन अवसर पर हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अधिक से अधिक युवा उनके विराट व्यक्तित्व और महानता से परिचित हों। आइए, हम अपने राष्ट्र और देशवासियों के लिए अशोक सिंघल जी के सपनों को साकार करने के संकल्प को एक बार फिर दोहराएं।

(लेखक भारत के प्रधानमंत्री हैं।)

आखिर आ ही गया भोपाल का नक्शा, रुकेगा नहीं विकास

भोपाल ने बहुत इंतजार किया है। बीस साल से यह शहर बिना नक्शे के दौड़ रहा था। अब जाकर टाउन एंड कंट्री प्लानिंग विभाग ने नए मास्टर प्लान का ड्राफ्ट तैयार किया है। एक-दो दिन में इसका प्रकाशन होगा। सुप्रीम कोर्ट ने 22 सितंबर को जब फटकार लगाई, तब फाइल हिली। भोपाल को इस प्लान की सख्त जरूरत है। इस बार इसे निरस्त मत होने दीजिए।

बदलेगा सड़कों का गणित। नए ड्राफ्ट की सबसे बड़ी बात है सड़कों का नया नियम। अब 12 मीटर से कम चौड़ी सड़क पर दुकान, शोरूम और मिक्स्ड यूज नहीं होगा। यानी छोटी गलियों में जाम लगाने वाला कारोबार बंद। 12 से 24 मीटर की सड़क पर सीमित कारोबार की छूट होगी और 24 मीटर से ज्यादा चौड़ी सड़क पर ही बड़े कॉमर्शियल प्रोजेक्ट बनेंगे। यह फैसला भोपाल की सांसें खोलेगा। अब तक हर गली में शोरूम खुल जाता था, गाड़ी सड़क पर खड़ी होती थी, पूरा मोहल्ला जाम होता था। अब मुख्य सड़क पर ही मुख्य बाजार होगा।

कॉलोनी के अंदर कारोबार पर ताला। नया प्लान कॉलोनी में रहने वालों के लिए राहत लेकर आया है। प्रस्ताव है कि रहवासी इलाकों और कॉलोनियों के भीतर किसी भी तरह की कारोबारी गतिविधि पूरी तरह बंद होगी। घर के बगल में गोदाम, वर्कशॉप और बड़ी दुकानों से जो परेशानी होती थी, अब उससे छुटकारा मिलेगा। शहर का शोर मुख्य सड़क पर रहेगा, घरों में सुकून रहेगा।

देर से ही सही, दुरुस्त आ रहा है

नए ड्राफ्ट की सबसे बड़ी बात है सड़कों का नया नियम। अब 12 मीटर से कम चौड़ी सड़क पर दुकान, शोरूम और मिक्स्ड यूज नहीं होगा। यानी छोटी गलियों में जाम लगाने वाला कारोबार बंद। 12 से 24 मीटर की सड़क पर सीमित कारोबार की छूट होगी और 24 मीटर से ज्यादा चौड़ी सड़क पर ही बड़े कॉमर्शियल प्रोजेक्ट बनेंगे। यह फैसला भोपाल की सांसें खोलेगा। अब तक हर गली में शोरूम खुल जाता था, गाड़ी सड़क पर खड़ी होती थी, पूरा मोहल्ला जाम होता था। अब मुख्य सड़क पर ही मुख्य बाजार होगा।

अब भोपाल ऊपर की ओर बढ़ेगा। भोपाल चारों तरफ नहीं फैल सकता। झीलें, पहाड़ और जंगल हैं, इसलिए अब वर्टिकल ग्रोथ का रास्ता खोला गया है। 24 मीटर से चौड़ी सड़कों पर एफएआर खरीदकर अनलिमिटेड निर्माण हो सकेगा। यानी बिल्डर को ज्यादा ऊंची बिल्डिंग बनानी है तो अतिरिक्त एफएआर खरीदना होगा। इसका पैसा सरकार शहर के विकास में लगाएगी। यह भोपाल को मुंबई और दिल्ली की तरह ऊपर बढ़ने में मदद करेगा। सीलिंग का जाल टूटेगा तो आएगा निवेश। भोपाल के विकास में सबसे बड़ा रोड़ा है सीलिंग। 1976 के कानून के कारण हजारों एकड़ जमीन आज भी फंसी है। बिल्डर डरता है, निवेशक भागता है। नया मास्टर प्लान इसी सीलिंग से मुक्ति के लिए लाया गया है। अगर यह जाल टूटा तो जमीन के दाम स्थिर होंगे और आम आदमी को सस्ता घर मिल सकेगा।

50 साल का विजन चाहिए। भोपाल अब 30 लाख का शहर है, 50 साल में 60 लाख होगा। कोलार, करोंद, रातीबड़, ईंटखेड़ी तक शहर फैल चुका है। बिना प्लान के सिर्फ झुग्गियां और अवैध कॉलोनियां बन रही हैं। न पानी की लाइन है, न सीवेज, न बिजली का हिसाब। मास्टर प्लान सिर्फ जमीन का बंटवारा नहीं है। यह अगले 50 साल के लिए सड़क, पुल, फ्लाईओवर, पानी, बिजली, मेट्रो और बस रूट का वादा है।

इसलिए अब जब ड्राफ्ट आ रहा है तो इसे रोकिए मत। आपत्ति कीजिए, सुधार कीजिए, लेकिन निरस्त मत कीजिए। भोपाल बहुत देर से इंतजार कर रहा है।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

84 महादेव दर्शन यात्रा

84 महादेव यात्रा : 49वें पृथुकेश्वर महादेव

जब पृथ्वी गौ बनकर राजा पृथु के सामने खड़ी हुई...

डॉ. नवीन आनंद जोशी

उज्जैन—अवंतिका वह नगरी जहाँ महाकाल की उपस्थिति में धर्म, साधना और अध्यात्म की चेतना युगों से प्रवाहित है। चौरासी महादेवों की यात्रा इसी आध्यात्मिक परंपरा का एक अद्भुत अध्याय है। इस पावन यात्रा का उनचासवाँ पड़ाव है—श्री पृथुकेश्वर महादेव।पृथुकेश्वर की कथा केवल एक राजा की कथा नहीं, बल्कि राजधर्म, प्रकृति, प्रजापालन, आत्ममंथन और शिव-शरणागति का गहन संदेश समेटे हुए है। स्कन्दपुराण के अवन्तीखण्ड के पृथुकेश्वर-माहात्म्य में राजा पृथु से जुड़ी इस कथा का वर्णन मिलता है।

अधर्म के बीच धर्म का उदय...राजा अंग के पुत्र वेन ने जब राज्य संभाला, तो धीरे-धीरे उसका जीवन धर्म से विमुख होता गया। उसने यज्ञ, वेदाध्ययन और धार्मिक आचरण का विरोध किया तथा ऋषि-मुनियों की वाणी की भी अवहेलना की। अंततः ऋषियों ने उसके अधर्म का अंत किया।वेन के पश्चात राज्य के सामने सबसे बड़ा प्रश्न था—प्रजा का पालन कौन करेगा और धर्म की पुनर्स्थापना कैसे होगी?क्या पुराण-कथा में वेन की देह के मंथन से राजा पृथु के प्राकट्य का वर्णन आता है। इसे आधुनिक जैविक जन्म के रूप में नहीं, बल्कि पुराणों की प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक भाषा के रूप में समझना उचित है—अर्थात् अधर्म के बीच धर्म और लोककल्याण की नई व्यवस्था का उदय।राजा पृथु ने राजसत्ता को भोग नहीं, प्रजापालन का दायित्व माना। पुराण-परंपरा में उन्हें भगवान विष्णु के अंशावतार के रूप में भी प्रतिष्ठित किया गया है।

जब पृथ्वी ने अन्न रोक लिया.... पृथु के राज्यारोहण के समय प्रजा अन्न के अभाव से पीड़ित थी। कथा के अनुसार वेन के अधर्म के कारण पृथ्वी ने अपने भीतर अन्न और वनस्पतियों को रोक लिया था। राजा पृथु ने इसे केवल अकाल नहीं, बल्कि अपने राजधर्म की परीक्षा माना।जब उन्होंने पृथ्वी से अन्न प्राप्त करने का संकल्प लिया, तब पृथ्वी गौ का रूप धारण कर उनके सामने उपस्थित हुई।यह प्रसंग अत्यंत मार्मिक है—एक ओर राजा का राजदंड था, दूसरी ओर प्रकृति का ममतामयी स्वरूप।पृथ्वी ने मानो यही संदेश दिया कि प्रकृति से प्राप्त करो, लेकिन मर्यादा और संरक्षण के साथ। स्कन्दपुराण में हिमालय को वत्स बनाकर पृथ्वी से अन्न और रत्न प्राप्त होने का उल्लेख मिलता है।यहीं से कथा एक गहरे दर्शन में बदल जाती है।पृथ्वी केवल भूमि नहीं, माता है। अन्न केवल वस्तु नहीं, जीवन का आधार और प्रसाद है।पृथु की कथा का यह प्रसंग आज भी उतना ही प्रासंगिक है। सनातन दृष्टि में प्रकृति से प्राप्त करना निषिद्ध नहीं, परंतु उसका असीमित शोषण स्वीकार्य नहीं दोहन में आवश्यकता और मर्यादा है;आज मनुष्य धरती

से अन्न, जल, वन, औषधियाँ और खनिज प्राप्त करता है। ऐसे समय में पृथुकेश्वर की कथा हमसे एक मौन प्रश्न करती है—

'धरती से इतना लेने के बाद हम उसे लौटाते क्या हैं? 'यही इस कथा का पर्यावरणीय और मानवीय संदेश है।

राजा की सबसे बड़ी विजय-आत्ममंथन

पृथु की महानता केवल प्रजा को अन्न उपलब्ध कराने में नहीं थी। उनकी वास्तविक महानता तब सामने आती है, जब उनके भीतर अपने कर्म को लेकर प्रश्न उठता है।

पृथ्वी के गौ-रूप और उससे जुड़े प्रसंग के बाद राजा को चिंता हुई कि कहीं उनके कर्म से कोई दोष तो उत्पन्न नहीं हुआ। उन्होंने अपने सामर्थ्य के बावजूद अपने कर्म को अंतिम सत्य नहीं माना, बल्कि अपने अंतःकरण में झाँका।यहीं राजा पृथु राजर्षि बनते हैं।शक्ति मनुष्य को बड़ा बना सकती है, लेकिन अपनी शक्ति और कर्म की समीक्षा करने का साहस उसे महान बनाता है।राजा पृथु ने अपनी व्यथा देवर्षि नारद के समक्ष रखी। नारद ने उन्हें अवंतिका के महाकालवन में स्थित दिव्य शिवलिंग की शरण लेने का मार्ग बताया, जो अभयेश्वर महादेव के पश्चिम में स्थित था।पृथु अवंतिका पहुँचे और उस शिवलिंग की श्रद्धापूर्वक आराधना की। स्कन्दपुराण के अनुसार दर्शन और पूजन से वे पापमुक्त हुए तथा उनका तेज प्रकाशित हुआ। राजा पृथु द्वारा पूजा किए जाने के कारण वह शिवलिंग पृथुकेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुआ।इस प्रकार पृथुकेश्वर की कथा राजसत्ता से आत्मसत्ता की यात्रा बन जाती है—जहाँ शक्ति के बाद विनम्रता आती है और कर्म के बाद आत्ममंथन।

पृथुकेश्वर महादेव की कथा आज के समय में विशेष अर्थ रखती है। पृथ्वी से हमारा संबंध केवल उपभोग का नहीं, उत्तरदायित्व का भी है।अन्न का सम्मान, जल के प्रति कृतज्ञता, वृक्षों और प्रकृति के प्रति संवेदना तथा अपने कर्मों के प्रति सजगता—यही इस कथा की जीवंत शिक्षा है।राजा पृथु हमें बताते हैं कि सच्चा शासक वह है जो प्रजा के दुःख को अपना दुःख समझे; सच्चा मनुष्य वह है जो प्रकृति के ऋण को पहचाने; और सच्चा धर्मात्मा वह है जो अपने कर्मों की समीक्षा करने से न डरे।उज्जैन की पावन भूमि पर पृथुकेश्वर महादेव के सामने शीश झुकाते हुए शायद हर श्रद्धालु अपने भीतर एक प्रश्न लेकर लौट सकता है। 'मैं इस धरती से क्या ले रहा हूँ और इसके लिए क्या कर रहा हूँ? 'यही प्रश्न इस प्राचीन कथा को आज के जीवन से जोड़ देता है।पृथु ने पृथ्वी पर केवल अधिकार स्थापित नहीं किया, बल्कि उसके साथ धर्मपूर्ण संबंध बनाया। और जब उनके अंतःकरण में संशय उठा, तो उन्होंने अहंकार का मार्ग नहीं, महादेव की शरण चुनी।इसलिए पृथुकेश्वर महादेव हमें आज भी मौन में यही संदेश देते प्रतीत होते हैं—

पृथ्वी को माता समझो,
अन्न को प्रसाद समझो,
प्रकृति को अपना ऋणदाता समझो,
अपने कर्मों के प्रति उत्तरदायी बनो
और भूल हो जाए तो अहंकार नहीं, प्रायश्चित्त का मार्ग चुनो।यही पृथुकेश्वर महादेव की अमर गाथा है।यही अवंतिका की आध्यात्मिक चेतना है। हर हर महादेव।